

चिकित्सा-विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में  
सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

**पाक्षिक**

**इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट**

वर्ष -40 ● अंक -8 ● कानपुर 16 से 30 अप्रैल 2018 ● प्रधान सम्पादक - डा0 एम0 एच0 इंदरीसी ● वार्षिक मूल्य - ₹ 100

पत्र व्यवहार हेतु पता :-  
सम्पादक  
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट  
127/204 'एस' जूही, कानपुर-208014

**बोर्ड के 44 वें स्थापना दिवस पर**

# भव्य सम्मान समारोह

**उत्कृष्ट कार्य करने वाले होंगे पुरस्कृत**

बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 विगत 43 वर्षों से इलेक्ट्रो होम्योपैथी के क्षेत्र में अवाध्य रूप से अपनी सेवायें चिकित्सा के क्षेत्र में विशेषतः इलेक्ट्रो होम्योपैथी को न सिर्फ आगे बढ़ा रहा है अपितु अपनी कार्य शैली के माध्यम से इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों के सुव्यवस्थित एवं नियमित शिक्षण हेतु बोर्ड द्वारा प्रदेश के अनेक जनपदों में शिक्षण हेतु संस्थानों एवं अध्ययन केन्द्रों के माध्यम से अनेकों कार्यक्रमों के साथ-साथ नये (फ़ेशर्स) को भी उचित शैक्षणिक गुणवत्ता के साथ साथ चिकित्सा जगत में जहाँ एक ओर चिकित्सा की विभिन्न पद्धतियाँ कठिन रोगों के उपचार हेतु प्रचलन में हैं वहीं दूसरी ओर इलेक्ट्रो होम्योपैथिक औषधियाँ भी साध्य एवं असाध्य रोगों के उपचार हेतु आरोग्य प्रदान करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रस्तुत कर रहा है।

बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 का 44वां स्थापना दिवस समारोह आगामी 21 अप्रैल, 2018 दिन-शनिवार, अपराह्न 2 बजे, स्थान-ऐवाने गालिब ऑकिटोरियम, निकट-डेन्टल काउन्सिल ऑफ इण्डिया, (बाल भवन के पीछे) माता सुन्दरी रोड, नई दिल्ली-110002 में आयोजित किया गया है, विदित हो कि बोर्ड द्वारा अपना तीसरा दीर्घान्त समारोह स्थानीय हिन्दी भवन में दिनांक 29 अप्रैल 1997 को आयोजित किया गया था इस अवसर पर सर्वश्री शिव पूजन सिंह एडवोकेट - सुप्रीमकोर्ट, ओम प्रकाश श्रीवास्तव पूर्व स्वास्थ्य मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार एवं रघु ठाकुर अध्यक्ष लोसपा क्रमशः उदघाटनकर्ता, मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्मिलित हुये थे।

बोर्ड द्वारा विगत 2 वर्षों अर्थात् 1995 एवं 1996 के उत्तीर्ण अभ्यर्थियों को

उपाधियाँ वितरित की गयी थीं तथा अन्य सहित डा0 एस0 हफ़ झारखण्ड को डी0एस- सी0 ई0 एच0 की मानद उपाधि से भी अलंकृत किया गया था इसी अवसर पर बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के सहयोग से 30 अप्रैल 1997 को इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ

इण्डिया द्वारा प्यारे लाल भवन आई0 टी0 ओ0 में महा सम्मेलन का भी आयोजन किया गया था तथा 01 मई, 1997 को फ़िराज शाह

कोटला मैदान से निर्माण भवन तक एक रैली निकाली गयी जिसे संसद मार्ग धाने में रोक लिया गया था परिणाम स्वरूप लगभग 500 लोगों ने अपनी गिरफ्तारी भी दी थी।

बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 द्वारा वर्ष 2014 में अपना 40वां स्थापना दिवस समारोह लखनऊ स्थित राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह, कैंसरबाग, बारादरी में आयोजित किया गया था इस अवसर पर बोर्ड के नये प्रास्पेक्टस का विमोचन भी किया गया था समारोह के मुख्य अतिथि स्वराजा-नुरीब-नवाज उर्दू अरबी फारसी विश्वविद्यालय के प्रथम कुलपति, पूर्व आई0ए0एस0 डा0 अनीस

अंसारी थे इस समारोह में देश के वरिष्ठ इलेक्ट्रो होम्योपैथ, संस्था संचालकगण बड़ी संख्या में सम्मिलित हुये समारोह की भव्यता इसलिये भी थी क्योंकि 1997 के बाद यह पहला बड़ा कार्यक्रम था, इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्तियों सहित चिकित्सकों को भी सम्मानित किया गया था।

**प्रतिस्पर्धा में जो आगे वही पायेगा लाभ न तो कोई बड़ा - न कोई छोटा सभी को मिलेगा उचित सम्मान अध्ययन केन्द्रों को भी स्थान स्थानीय को भी पूरा अवसर प्रतिस्पर्धा का है जमाना**

इसी प्रकार बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 का 42वां स्थापना दिवस समारोह उ0प्र0 की राजधानी लखनऊ के गंगा प्रसाद वर्मा मेमोरियल हॉल अमीनाबाद में आयोजित किया गया था इस समारोह में डा0 एस0 के0 विश्वास-मिदनापुर (पश्चिम-बंगाल) डा0 ए0 पी0 गौर्या-कोलकाता, डा0 आर0 के0 वर्मा "रवि"-अम्बिकापुर की उपस्थिति उल्लेखनीय थी, समारोह के मुख्य अतिथि प्रदेश सरकार के कैबिनेट मंत्री डा0 राम आसारे कुशावाहा थे इस अवसर पर उत्कृष्ट कार्य करने वाले संस्थानों, आशीष इलेक्ट्रो हॉम्योपैथिक मेडिकल इन्सटीट्यूट-रायबरेली, माँ

सरजू देवी इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल इन्सटीट्यूट-लखीमपुर तथा डॉ0 पार इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल इन्सटीट्यूट-आजमगढ़ को क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया था इस अवसर पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के प्रखर वक्ता डा0

प्रमोद शंकर राजपेयी को भी इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मनीषी उपाधि से विभूषित किया गया था।

बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 की प्रबन्ध कमेटी ने निश्चय किया कि गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी स्थापना दिवस समारोह हर्षल्लास के साथ देश की राजधानी नई दिल्ली में मनाया जाये क्योंकि यह वर्ष अन्य वर्षों की तुलना में बहुत महत्वपूर्ण है बोर्ड ने अपने नवीन पाठ्यक्रमों क्रमशः G.E.H.S. एवं P.G.E.H. के संचालन का निश्चय जहाँ 17 फरवरी, 2017 को किया था जिसका लोकार्पण बोर्ड के कार्यालयों सहित बोर्ड द्वारा सम्बद्ध संस्थानों एवं अध्ययन केन्द्रों में 43वें स्थापना दिवस के अवसर पर 24 अप्रैल, 2017 को किया गया था वहीं भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय

स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग द्वारा दिनांक 28 फरवरी, 2017 को नोटिस जारी कर इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता के मैकेनिज़म हेतु प्रपोज़ल आमंत्रित किये गये 31 दिसम्बर, 2017 तक प्राप्त प्रपोज़लों के परीक्षणोपान्त दिनांक 09 जनवरी, 2018 को प्रजेन्टेशन हेतु सभी प्रपोज़ल देयताओं को आमंत्रित किया जातव्य हो कि 21 दिसम्बर, 2017 को भारत सरकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया को स्पष्ट किया जा चुका था कि केन्द्र सरकार का स्टैण्ड 21 जून, 2011 का आदेश (जो इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया को ही प्राप्त है) आज भी है।

भारत सरकार द्वारा प्राप्त प्रपोज़ल तथा दिनांक 09 जनवरी, 2018 को दिये गये प्रजेन्टेशन के निष्कर्ष के रूप में जो कार्यवाही 19 मार्च, 2018 को जो सामने आयी उससे स्पष्ट होता है कि सरकार द्वारा वाकित जानकारियाँ सटीक रूप से प्रस्तुत नहीं की गयी थीं जिसके कारण इन्टरडिपार्टमेंटल कमेटी किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच पाई और उसने बिना किसी टिप्पणी के पुनः प्रपोज़ल देने की अपेक्षा की।

सरकार ने एक बार फिर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के साथ न्याय करते हुये स्टैक होल्डर्स को अवसर प्रदान कर दिया है अब देखना यह है कि वे इस सुनहरे अवसर का लाभ किस प्रकार उठाते हैं ?

## समारोह आखिर दिल्ली में ही क्यों ?

28 फरवरी, 2017 से जबसे भारत सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता के मैकेनिज़म के लिये नोटिस जारी किया तबसे इलेक्ट्रो होम्योपैथी की महामागहरी दिल्ली में ही केंद्रित रही, पचीसों सेमिनार एवं वैज्ञानिक सेमिनारों का आयोजन किया गया, विचारों का आदान प्रदान हुआ परन्तु जो परिणाम निकलकर आया वह आप सभी के सामने है, ऐसी परिस्थितियों में बोर्ड की प्रबन्ध कमेटी ने उचित समझा कि वर्तमान स्थिति से लोगों को अवगत कराने के उद्देश्य से दिल्ली ही एकमात्र उचित स्थान है जहाँ लोगों को वास्तविकता से अवगत कराया जा सकता है। इस समारोह का मुख्य आकर्षण सम्मान के साथ-साथ बोर्ड से सम्बद्ध संस्थानों/अध्ययन केन्द्रों को उनके कार्यों की समीक्षा के आधार पर उन्हें पुरस्कृत भी किया जायेगा।

## मान्यता की पहल पुनः

देश की आजादी के सत्तर वर्षों बाद केन्द्र सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता के लिये एक बार फिर देश के इलेक्ट्रो होम्योपैथिक संगठनों को यह अवसर दिया और यह अपेक्षा की कि पूरे देश से एक ही प्रस्ताव आये उसमें जो भी संगठन/व्यक्ति/संस्थायें सम्मिलित हों, इनके नाम दिये जा सकते हैं किन्तु सरकार द्वारा जो सूचना जारी की गयी उसमें सभी स्टैक होल्डर्स से प्रपोजल मांगे गये थे, प्रपोजल के लिये बिन्दु भी निर्धारित थे चूंकि प्रपोजल सभी से मांगे गये थे इसलिये बिना कुछ विचार किये सभी लोगों ने प्रपोजल देने की होड़ लगा दी और जिसे जो कुछ भी बन पड़ा उसने अपने विवेक का प्रयोग करते हुये कि कहीं वह छूट न जाये, प्रपोजल भेजने की प्रतियोगिता चला डाली और सरकार के पास प्रपोजलों के अम्बार लग गये।

प्राप्त सूत्रों के अनुसार सरकार को भेजे गये प्रपोजलों की संख्या लगभग सौ को हू गयी, प्रपोजल बरफबद्ध ढंग से क्रमशः मार्च, जून, सितम्बर एवं दिसम्बर तक प्रेषित करने थे इनमें से प्रथम दृष्टयः एनेक प्रपोजलों को प्रतियोगिता से बाहर का रास्ता दिखा दिया गया, अन्ततः 21+6 प्रपोजलों का ही परीक्षण किया गया जबकि सरकार द्वारा जारी कार्यवाही में इनकी संख्या 29 दर्शायी गयी है, सरकार एवं इन्टरडिपार्टमेंटल कमेटी की नियत बिलकुल स्पष्ट है वह आज भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी को वही सम्मान और स्थान देने की इच्छुक है जो अन्य प्रचलित मान्यता प्राप्त चिकित्सा पद्धतियों को प्राप्त है किन्तु मान्यता के लिये कुछ आवश्यक एवं बांछनीय बिन्दु निर्धारित हैं जिनका उल्लेख सरकार द्वारा जारी नोटिस में स्पष्ट रूप से किया गया है, सरकार को प्रस्तुत प्रपोजलों में इसपर कोई स्पष्ट एवं सकारात्मक जानकारी उपलब्ध नहीं करायी गयी है जिसके कारण प्रपोजलों का परीक्षण करते हुये कमेटी ने अनेक सकारात्मक सुझाव दिये हैं जिससे आगे का रास्ता अग्री भी खुला हुआ है।

अब इलेक्ट्रो होम्योपैथिक संस्थाओं/संगठनों एवं व्यक्तियों को नये सिरों से पुनः विचार करना पड़ेगा कि सरकार द्वारा जारी 28 फरवरी, 2017 की नोटिस को वे किस रूप में लेते हैं ! सरकार की कल भी मंशा थी और आज भी सरकार का वही दृष्टिकोण है कि एक ही प्रपोजल प्रेषित किया जाये, आपको याद होगा कि इन्टरडिपार्टमेंटल कमेटी ने प्रपोजल प्रेषित करने वालों से बार-बार आग्रह किया था कि वे एक होकर संयुक्त रूप से एक ऐसा प्रपोजल दें जिसमें वे सारे तथ्य समाहित हों जो वास्तव में सरकार को चाहिये ताकि वर्षों से मान्यता के लिये प्रतीक्षित इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति और इससे जुड़े व्यक्तियों का मला हो सके, पर धन्य हैं हमारे साथी जो मैं आगे - मैं आगे के मोह को त्याग नहीं सके।

अभी भी समय है, समय की नज़ाकत को समझते हुये और समय का सही उपयोग करते हुये सरकार द्वारा वांछित जानकारियों को उपलब्ध कराते हुये इलेक्ट्रो होम्योपैथी को चिकित्सा पद्धति के रूप में मान्यता प्राप्त कराने का प्रयास करें, यह बात यहाँ पर इसलिये कही जा रही है कि कमेटी के सदस्यों द्वारा यह सुझाव दिया जा रहा है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी को चिकित्सा पद्धति के बजाये थेरेपी के रूप में विचार किया जाये यदि हम अपनी बात को सही ढंग से नहीं रख पायेंगे तो इलेक्ट्रो होम्योपैथी, इलेक्ट्रो कॉम्प्लेक्स होम्योपैथी, इलेक्ट्रोपैथी इसके बाद इलेक्ट्रो थेरेपी हो जायेगी, अग्री भी कुछ नहीं बिगड़ा है, समय के कालचक्र को ध्यान में रखते हुये सचेत हो जाइये एक बार अवसर और मिल गया है इस अवसर का पूरा लाभ उठाते हुये पीछे की गयी चूक को ध्यान में रखते हुये इस अवसर का भरपूर लाभ लें अब समय की मांग है कि एक होकर पहले आपस में पूरी मन्वणा कर लें, संयुक्त रूप से, सभी की सहमति से एक सशक्त ऐसा प्रपोजल बनायें जिसमें सरकार द्वारा मांगी गयी सभी आवश्यक एवं बांछनीय बिन्दुओं की जानकारी समाहित हों इसमें न तो कोई अपने आपको छोटा समझे और न ही बड़ा।

जहाँ बड़े-छोटे का भाव होता है निःसन्देह परिणाम नकारात्मक ही मिला करते हैं, अब हमें यह स्वयं निर्णय लेना होगा कि हम अन्ततः किस ओर जाना चाहते हैं हमें सबके लिये भला करना है या केवल अपने आप के लिये भला करना है ! याद रहे संयुक्त प्रयास कभी भी विफल नहीं हुआ करते हैं, हमारे थोड़े से लाभ के लिये पूरे समाज की हानि हो तो इसे प्रकृति भी सहन नहीं करती है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता के लिये चिकित्सा पद्धति की गुणवत्ता एवं उपयोगिता को सिद्ध करना है जो वैज्ञानिक आधार पर संकलित आँकड़ों से ही सम्भव है इसके लिये नियमित कार्य की आवश्यकता है और वह भी जो प्रमाणित हो।

आओ दिल्ली चलें ! जय मैटी !! जय इलेक्ट्रो होम्योपैथी !!!

BOARD OF ELECTRO HOMEOPATHIC MEDICINE, UTTAR PRADESH • CELEBRATING FOUNDATION DAY

इलेक्ट्रो होम्योपैथी के  
नियमितकरण के सम्बन्ध में  
19 मार्च, 2018 को  
भारत सरकार  
द्वारा  
जारी आदेश  
व  
21 जून, 2011 के आदेश का  
और  
मज़बूत होना  
इलेक्ट्रो होम्योपैथी के  
बढ़ते कदमों को  
जानने के लिये  
सम्मिलित हों  
बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक  
मेडिसिन, उ०प्र०



के 44 वें स्थापना दिवस  
के अवसर पर  
दिनांक:— 21 अप्रैल, 2018  
दिन:— शनिवार  
समय:—अपराह्न 2 बजे  
स्थान:— ऐवान-ए-  
ग़ालिब ऑडिटोरियम  
(सेमिनार हॉल)  
बाल भवन के पीछे  
निकट:—डेन्टल काउंसिल ऑफ इण्डिया  
माता सुन्दरी रोड,  
नई दिल्ली में  
आप सभी  
इष्ट मित्रों सहित  
आमंत्रित हैं

आओ दिल्ली चलें ! जय मैटी !! जय इलेक्ट्रो होम्योपैथी !!!

BOARD OF ELECTRO HOMEOPATHIC MEDICINE, UTTAR PRADESH • CELEBRATING FOUNDATION DAY

## Minutes of Inter-Departmental Committee Seeking Recognition

In his introductory remarks, Dr. V.M. Katoch, Chairperson I D C, observed that Electrohomoeopathy was claimed to be an old system of healthcare in India, and, according to its proponents, this system had a history of 150 years and, as per some submissions, has existed in India for nearly 100 years. He stated that he has gone through the proposals (including voluminous attachments) received from the organizations seeking recognition for Electrohomoeopathy as a system of medicine, and noted that while most of the points were common, however, relevant reference literature was mostly missing and inadequate. He stated that list of authentic scientific books, literature and journals like those in Allopathic, Ayurveda, etc; was a must and needed to be presented, by a joint body of all the applicants. He emphasized that I D C required nothing but pure scientific data and information in order to evaluate the viability and efficacy of the proposed system. He hoped that in the presentations to follow, the applicants would endeavor to provide this information.

Dr. Darshan Shankar, Vice-Chancellor, Trans Disciplinary University, Bengaluru, who is a member of I D C, could not attend the meeting owing to prior commitment. However, he has e-conveyed that "Electro-pathy/Electro-homoeopathy should be examined as a mode of therapy and not as system of medicine".

Thereafter, the following organizations made detailed power-point-presentations, one by one, before the I D C on their respective proposals for the recognition of 'Electro-homoeopathy' as a system of medicine, with KERF and SEPA doing it jointly:

- Electrohomoeopathic Research and Development Organisation of India (ERDOI), Delhi.
- Central Council of Electro Homoeopathic System of Medicine (CCEHSM), West Bengal.
- Maharashtra Electro Homoeopathic Chikitsak Association (MEHCA), Maharashtra.
- Kasturba Electrohomoeopathic Research Foundation (KERF), Odisha.
- State Electro Homoeopathic Physician's Association (SEPA), Odisha.
- Indian Electrohomoeopathy Recognition Sangharsh Committee (IEHRC), Gujrat.
- N.E.H.M. of India, Delhi.

All these bodies made detailed 'presentations', giving their own justifications for recognizing this system. Some such submissions were as under:

- ⊙ Electrohomoeopathy has its own principle, which logically explain concept of health, disease and therapeutics.
- ⊙ The system has its own way of diagnosis to ascertain the root cause of sickness.
- ⊙ The system has medicines for internal and external applications to manage the diagnosed sickness as per its law of dosology.
- ⊙ The system has its own unique "Spagyric based Pharmacy" to prepare the drugs, which is a part of "German Homoeopathic Pharmacopeia".
- ⊙ Diagnostic and therapeutic system is safe from human health point of view.
- ⊙ Broad-based clinical data is available to ascertain therapeutic value of the system, which is recognized by various research papers, pre-clinical studies.
- ⊙ It is entirely different - in theory, practice and art of healing - from other recognized systems of medicine, like Allopathy, Ayurveda, Naturopathy, Unani and Siddha, and has no interrelation by any means. Neither it has any resemblance, in the art of treatment, which some other popular therapies like Acupuncture, Acupressure, Reflexology, where the points on body are pierced and pressed to tonify the "Chi". But, in Electrohomoeopathy, some special points are identified on the body for application of medicines (for external application) to get the result.
- ⊙ This is a natural and most scientific system of medical science based on the law of nature that can preserve and cure nature's creation. It enables restoration of health of the living beings quickly, gently and permanently.
- ⊙ In 1865, Dr. Count Ceasare Mattei invented this quick healing medical science and titled it as "Electro-Homoeopathy", as he observed its magical ultra-fast electric current pulse like remedial effectiveness and compared it with instantaneous electrical induction phenomenon occurred in a Lyden Jar. The medicines are natural, harmless, simple, unique, non-alcoholic and have no side effect. Besides, it is rather cheap and affordable to all sections of the society.
- ⊙ The Electrohomoeopathy medicines are prepared by scientific process called 'Cohobation', which was introduced by Dr. Therophrastus Von Hoheneim, in which the living energies of the plants in the form of 'Spagyric Essences' obtained from selected parts of medicinal plants. These remedies have maximum curative capacity to regulate the Lymph and Blood, and also to keep them

- ⊙ purified maintaining 'Homeostasis'.
- ⊙ Electrohomoeopathic drugs are non-poisonous, and do not create drug diseases or leave any bad effects.
- ⊙ They act with remarkable rapidity.
- ⊙ Medicines mainly work on the blood and lymph.
- ⊙ They furnish useful elements to the plasma of the blood and they provide nutrition for the cells of which the tissues are built.
- ⊙ They give tone to the brain and nerves by which the bodily processes are controlled, and strengthen the organs of digestion.
- ⊙ They promote the expulsion, through the skin and channels, of morbid and superfluous and substances which interfere with the health of the body.
- ⊙ They give to the blood and lymph, and more particularly to the leucocytes, which are found in those fluids, such additional vigorous and vitality as enables them more successfully to attack, weaken, neutralize, destroy and expel the bacilli and other disease producing germs which invade the organism.
- ⊙ They embody the active principle of a large variety of plants, including some of the subtler elements which have played a prominent part in the activities of vegetable life, and which Count Mattei described as 'Electricity', while others have called them 'Electalins' or 'Electrals'.
- ⊙ They are, with the exception of recently introduced laxative remedy, and of the liquid electricities, quite tasteless. Consequently they are very readily taken by infants and children.
- ⊙ It is easily affordable to all classes of people of the society.
- ⊙ The remedies do not require any preservatives.
- ⊙ There are 114 medicinal plants used to prepare remedies.
- ⊙ There are total 38 medicines divided in 9 groups of remedies.
- ⊙ The selection of remedies depend on TEMPERAMENT.
- ⊙ The selection of Diluted or Undiluted doses depend upon the condition of disease.

- ⊙ The medicines are applicable in the form of pills, dilutions, ointments, oils, injectables, eye/ear drops, compresses and baths.
- ⊙ Licensed laboratories in Germany and Switzerland with the same standards of safety as modern drugs. They are produced in such a way that no alkaloids or toxic molecules can be found in final products.
- ⊙ There are about ten or more boards imparting education on Electrohomoeopathy via hundreds of institutions in India. A part from this, there are number of bodies in the country involved in research works-educational, pharmacological, pharmaceutical and clinical.
- ⊙ Future B.E.M.S. Course Plan:
- ⊙ One presentation also mentioned that Electrohomoeopathic organizations have since succeeded to arrange some original and valuable literature and other authentic information to prove the efficiency of the system, which was mostly found incomplete by the expert committees organized by the Government, from time to time, to evaluate the facts of the alternative medical sciences, especially the Electrohomoeopathy, for their official recognition.

During the 'presentations', Dr. V. M. Katoch, Chairperson, Dr. Bhushan Patwardhan, Professor & Director, Interdisciplinary School of Health Science, Savitribai Phule Pune University, Dr. Y.K. Gupta, Professor & Head, Department of Pharmacology, AII MS, New Delhi and Dr. K.K. Talwar, Chairman-Cardiology, Max Super Speciality Hospital, New Delhi, emphasized, inter alia, that scientific books, which are authentic, are required for evaluation of the Electrohomoeopathy system. Dr. B.D. Athani, Spl. DG, Directorate General of Health Services, raised a query as to what where the number of drugs in this system, where and how these are manufactured, and how they are labeled. He added that the number of combinations, where these are manufactured and what is the system for quality control are also required. He further stated that a common table is required in this regard from all the applicants.

Dr. K.K. Talwar requested MEHCA, during latter's presentation, to provide curriculum, course content and qualifications required to get admission in Electrohomoeopathy courses. The Chairperson advised all the participating organizations to provide a common comparison table, showing curriculum, courses, etc., for degree / diploma. He made it clear that the committee is not to see the legality aspect, but only pure science to see that it is safe or not for the public. Shri V.K. Guaba, joint secretary (DHR), observed that the existing bodies, having maximum connect with any new system seeking recognition, need to be utilized for recognition / monitoring such system rather than creating new bodies. On this principle- he added - if the Electrohomoeopathy system is ultimately found to be viable, either as a full-fledged system or a therapy, then it may have to be suitably aligned with the AYUSH dispensation, to which system like Electrohomoeopathy appear to be very close. Chairperson, Dr. Talwar and Dr. Patwardhan unanimously demanded standardized scientific papers and course curriculum. Dr. further enquired whether it is a part of homoeopathy in German, because it has been stated that Electrohomoeopathy medicines are manufactured under standardized

Continued on next page

## ..... Continued from Page 3

preparation, the methods being controlled as per the German Homoeopathic Pharmacopoeia. The applicant replied that it is a part of homoeopathy. Dr. Talwar further asked if they were convinced that it was not a part of homoeopathy. There was no satisfactory answer. At this point, Dr. Manoj Nesari, Adviser, Ministry of AYUSH, commented that the word 'homoeopathy' in the term 'Electrohomoeopathy' is a misnomer, and that homoeopathy has nothing to do with it. Dr. Bahubali Shah, ERDO, New Delhi, stated to be a homoeopath himself, mentioned that EH is different from homoeopathy. Dr. Katoch commented that homoeopathic drugs are made from organic, inorganic and poisonous substances / plants, unlike the drugs under Electrohomoeopathy. After detailed deliberations, some expert members were not very convinced with the submissions that it was completely different from homoeopathy, particularly when the method for preparation of drugs in the system was stated to owe its origin to the German Homoeopathic Pharmacopoeia.

Dr. V.M. Katoch, Chairperson, observed that all the applicants must ensure that the system agrees on the 'five' principles (essential criteria), and then the 'two' desirable criteria. He stated that if started from Italy, then there must be text books in Italy and also in Germany. Further, He wanted the names of institutions in these countries where Electrohomoeopathy was taught. He added that the committee requires a common list on all these issues. Dr. Nesari wanted to know whether in countries like Germany, UK, etc., Electrohomoeopathy medicines were regarded as drugs or products. Dr. Bhushan Patwardhan observed that this meeting being scientific in nature, the committee needs to see all these. Dr. Patwardhan further commented that while in the country there were no dearth of so-called journals, which could be easily printed and procured on demand by spending money, but what was required was genuine standardized books and scientific literature (papers published in scientific journals, etc) on the subject. Dr. Y.K. Gupta wanted to know about the type of drugs, who prepared them and sold in country.

On certain submissions made by the representatives of KERF and SEPA during their joint presentation, Dr. Y.K. Gupta asked that the statement, indicating names of all text books, with date of edition, new editions, etc., should be jointly prepared, and submitted to the committee. He advised that it should be collected from all parts of the country and abroad. Chairperson observed that all the 29 invitee organizations should do this collectively, and then provide to committee. Dr. Patwardhan stated that the top 10 publications should be listed. Dr. Gupta said there should be globally data-based index.

During IEHRSC presentation, Dr. Y.K. Gupta wanted to know as to what was the special thing about Electrohomoeopathy, which makes it different from other systems. Representative of IEHRSC observed that science is endless, and whenever necessity arises, development takes place, and whatever tools are made today, it would be for the next generation. Dr. Gupta further mentioned that the following information would be relevant:

- \* What is the 'science' of this system ?
- \* Human resource required to develop it.
- \* How many books are there ?
- \* How many qualified teachers are there to impart education ?
- \* What is to be done for conducting examinations ?
- \* Strength and weaknesses of the system.

NEHM was the last to make presentation. Chairperson observed that in the year 1991, the then Deputy Minister in the Ministry of Health had authorised NEHM for development, promotion and research in Electopathy in India. He, therefore, wanted to know what developments on the subject were made during the last 26 years, and what coordination was done all these years. NEHM stated that the Electrohomoeopathy method was quicker, cheaper and safer. To a query from Dr. Y.K. Gupta if they were awarding 'degrees', NEHM informed that it is 'certificate' only (BEMS : Bachelor of Electrohomoeopathic Medicine and Surgery). Dr. Gupta commented that normally 'Bachelor' word is used to denote 'degree'. Chairperson stated that since Electrohomoeopathy has come from outside the country, committee requires authentic documents about the system. NEHM stated that in the first year, anatomy, physiology and pharmacy are taught, in the second year it is practical medicine, gyanocology, and in the third year, it is material medica and practice of medicine, Dr. Y.K. Gupta asked as to which council has taken out the pharmacopoeia. NEHM replied that it is extract from German Pharmacopoeia. Dr. Gupta observed that it means that they don't have pharmacopoeia, Dr. Talwar commented that German Pharmacopoeia was perhaps for homoeopathy only.

Though the committee appreciated the work done generally by the applicants, following were some of the inconsistencies which could be noticed during submissions made in the presentations:

- ✓ Lack of latest scientific, standardized and authentic literature in the form of journals, books, etc., published in the public domain.
- ✓ Details of the latest research work on the system.
- ✓ List of skilled persons / experts, imparting education on the system, institutes, and training facilities therein.
- ✓ While one of the applicants has stated that BEMS is a certificate course, some others have mentioned that it is a degree course. Committee noted this varying statements, and observed that correct position should be intimated and that there must be uniformity in submission of important information by all the promoters.
- ✓ How the system could be called entirely different from Homoeopathy, when preparation of drugs under the system is somehow linked to the German Homoeopathic Pharmacopoeia.
- ✓ Dr. V.M. Katoch stated that the committee requires papers, reference to relevant books, recent books on all the aspects of management of diseases for which Electrohomoeopathy is stated to be effective. He commented that as preparation follow spagyric principles why nomenclature of system should not resemble that. He mentioned that the bodies advocating for 'Accupuncture' took six years to arrange for documents and hope that all stakeholders for this system will do it faster. Dr. Patwardhan wanted list of top 10 books on Electrohomoeopathy. He also wanted to know if it has been separated from homoeopathy, and if so, then on what basis

Concluding the detailed discussions held on the subject, Dr. V.M. Katoch, Chairperson advised all the 29 applicant-organizations to hold meeting among themselves, based on the discussions held on the day, and then comeback to the committee with authentic, standardized and purely scientific data/ material, including books / journals / references, etc., on the system of Electrohomoeopathy, and with all other information and documents on all related issues, to facilitate proper evaluation of the viability of the system. He added that for the sake of proper and correct appraisal of the issue, all these applicants would be advised to make only one combined, consolidated and unanimous revised submission before the committee, and not individual submissions. And while doing this, they have to justify that the proposals satisfies seven principles/ criteria led down for recognition of a system which is defined in the notification of DHR. He made it clear that unless and until the committee was convinced about the suitability of the system for safe adoption in the healthcare mechanism, the committee would not be able to make any recommendations in its favour to the Government.

## निःशुल्क चिकित्सा शिविरों का पहला चरण प्रारम्भ

निःशुल्क चिकित्सा शिविरों के आयोजन में पहले चरण में जहां फिरोजाबाद में डा० शिव कुमार पास के नेतृत्व में शिविर लगा वहीं साहजजापुर में डा० अन्वार बिन साबिर के नेतृत्व में शिविर लगाया गया जनेको रोगियों को वरिष्ठ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों ने अपनी बहुमूल्य सेवाएँ देकर रोगियों को जहाँ लाभ पहुँचाया वहीं इन्स्टीट्यूट के छात्रों एवं छात्राओं ने भी इस शिविर में भाग लेकर नये-नये रोगों की जानकारी प्राप्त कर अपना ज्ञान भी बढ़ाया।

